## DR. BINDESHWAR PATHAK (POSTHUMOUS)

Dr. Bindeshwar Pathak, the Founder of Sulabh International Social Service Organisation, is widely recognised in India and the world for developing a low-cost two-pit pour-flush toilet system and leading the nationwide social sanitation and reform movement since 1970.

2. Born on 02 April, 1943, in Rampur Bhagel, Bihar, Dr. Pathak, after graduating in 1964, worked as a teacher before joining the Bihar Gandhi Centenary Celebration Committee in 1968, where he was asked to restore the human rights and dignity of untouchables. In 1985, he completed his doctorate from Patna University and in 1994 was awarded D.Litt for his work on "Eradication of Manual Scavenging and Environmental Sanitation in India. - a Sociological study."

3. Dr. Pathak's work had a dual impact on culture and community. Culturally, he used his toilet model to advocate behaviour change by encouraging millions to adopt hygienic and safe sanitation practices and good health. To achieve this, he led a door-to-door campaign to motivate and educate the beneficiaries to convert their bucket latrines into Sulabh toilets. He also introduced the concept of pay and use public toilets, and the first public toilet was built by Sulabh in Patna in 1974.

4. Dr. Pathak was inspired by Mahatma Gandhi for community work. He dedicated his life to tirelessly working for the human rights of the manual scavengers, from the lowest stratum caste-based system and were primarily women. His actions aimed at rehabilitating manual scavengers, resorting to their dignity by providing alternative employment through skill development, present an inspiring example of promoting peace, tolerance, and empowerment of women.

5. Dr. Pathak strongly advocated Prime Minister's flagship programme, Swachh Bharat Mission. He significantly promoted his vision of making India free of open defecation and raising awareness about Swachhata. His organisation, Sulabh International, was awarded the International Gandhi Peace Prize (2016) for its contribution to improving the condition of sanitation in India and the emancipation of manual scavengers. In 2016 Shri Pathak became the Brand Ambassador of the Swachh Rail Mission of Indian Railways.

6. Dr. Pathak also contributed to improving widows' living conditions in the holy towns of Vrindavan and Varanasi. His initiative for widows at the behest of the Supreme Court of India in 2012 was to emancipate the widows from all kinds of deprivations, restrictions and humiliations and preserve their dignity. He improved their shelter homes and further created provisions for their medical and livelihood needs.

7. Dr. Pathak won several national and international awards for his seminal contributions. Prominent Awards include Padma Bhushan from the Government of India (1991), The International Saint Francis Prize for Environment (1992), and the Stockholm Water Prize by Stockholm International Water Institute (2009), Public Health Champion Award by WHO in New Delhi; '2016 Humanitarian Award' by New York Global Leaders Dialogue; '23rd Nikkei Asia Prize' in Japan etc. The Time *magazine* selected him as one of the Heroes of the Environment for developing a low-cost toilet. He was ranked by The Economist (November 2015) amongst the World's Top 50 diversity figures in public life. Mayor of the City of New York, declared April 14, 2016, as 'DR. BINDESHWAR PATHAK DAY'.

8. Dr. Pathak passed away on 15th August, 2023.

# डॉ. विन्देश्वर पाठक (मरणोपरांत)

सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गनाइजेशन के संस्थापक डॉ. विन्देवर पाठक को कम लागत वाली टू पिट पोअर फ्लश शौचालय प्रणाली विकसित करने और 1970 से देशव्यापी सामाजिक स्वच्छता और सुधार आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए भारत और दुनिया भर में जाना जाता है।

2. 02 अप्रैल, 1943 को बिहार के रामपुर भगेल में जन्मे डॉ. पाठक ने 1964 में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद एक शिक्षक के रूप में काम किया, इसके बाद वह 1968 में बिहार गांधी शताब्दी समारोह समिति में शामिल हुए, जहां उन्हें अस्पृश्य जाति के मानवाधिकारों और सम्मान को बहाल करने का काम सौंपा गया। 1985 में, उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि पूरी की और 1994 में "भारत में मैनुअल स्कैवेंजिंग के उन्मूलन और पर्यावरण स्वच्छता – एक समाजशास्त्रीय अध्ययन" पर उनके कार्य के लिए उन्हें डी.लिट से सम्मानित किया गया।

3. डॉ. पाठक के प्रयासों का संस्कृति और समुदाय पर दोहरा प्रभाव पड़ा। सांस्कृतिक रूप से, उन्होंने लाखों लोगों को स्वच्छ और सुरक्षित सेनिटेशन प्रैक्टिस तथा अच्छे स्वास्थ्य को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हुए व्यवहार में बदलाव लाने के लिए अपने शौचालय मॉडल का इस्तेमाल किया। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, उन्होंने लाभार्थियों को अपने बाल्टी शौचालयों को सुलभ शौचालयों में बदलने के लिए प्रेरित करने और शिक्षित करने के लिए घर–घर अभियान चलाया। वह पैसे देकर सार्वजनिक शौचालय का इस्तेमाल करने का विचार भी लेकर आए और सुलभ का पहला सार्वजनिक शौचालय 1974 में पटना में बनाया गया।

4. डॉ. पाठक सामुदायिक कार्यों के लिए महात्मा गांधी से प्रेरित हुए। उन्होंने हाथ से मैला ढोने वालों, जो जाति–आधारित व्यवस्था के सबसे निचले तबके से आते थे और उनमें मुख्य रूप से महिलाएं थीं, के मानवाधिकारों के लिए अथक प्रयास में अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनके प्रयासों का उद्देश्य था, हाथ से मैला ढोने वालों का पुनर्वास, कौशल विकास के माध्यम से वैकल्पिक रोजगार प्रदान करके उनका सम्मान बहाल करना, शांति, सहिष्णुता तथा महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देने का एक प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत करना।

5. डॉ. पाठक ने प्रधानमंत्री के प्रमुख कार्यक्रम स्वच्छ भारत मिशन की पुरजोर वकालत की। उन्होंने भारत को खुले में शौच से मुक्त बनाने और स्वच्छता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के अपने दृष्टिकोण को खूब बढ़ावा दिया। उनके संगठन सुलभ इंटरनेशनल को भारत में स्वच्छता की स्थिति में सुधार और हाथ से मैला ढोने वालों के उद्धार में योगदान के लिए अंतरराष्ट्रीय गांधी शांति पुरस्कार (2016) से सम्मानित किया गया। 2016 में श्री पाठक भारतीय रेलवे के स्वच्छ रेल मिशन के ब्रांड एंबेसडर बने ।

6. डॉ. पाठक ने पवित्र शहरों वृन्दावन और वाराणसी में विधवाओं की जीवन दशा सुधारने में भी योगदान दिया। 2012 में भारत के उच्चतम न्यायालय के आदेश पर विधवाओं के लिए उनकी पहल का उद्देश्य विधवाओं को सभी प्रकार के अभावों, प्रतिबंधों और अपमान से मुक्त कराना और उनका सम्मान बनाए रखना था। उन्होंने उनके आश्रय गृहों की अवस्था सुधारी और उनकी चिकित्सा तथा आजीविका की जरूरतों के लिए प्रावधान भी बनाए।

7. डॉ. पाठक को उनके मौलिक योगदान के लिए कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। प्रमुख पुरस्कारों में भारत सरकार से पद्म भूषण (1991), पर्यावरण के लिए अंतरराष्ट्रीय सेंट फ्रांसिस पुरस्कार (1992), और स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय जल संस्थान द्वारा स्टॉकहोम जल पुरस्कार (2009), नई दिल्ली में डब्ल्यूएचओ द्वारा सार्वजनिक स्वास्थ्य चैंपियन पुरस्कार; न्यूयॉर्क ग्लोबल लीडर्स डायलॉग द्वारा '2016 ह्यूमैनिटेरियन अवार्ड'; जापान में '23वां निक्केई एशिया पुरस्कार' आदि हैं। कम लागत वाला शौचालय विकसित करने के लिए टाइम पत्रिका ने उन्हें पर्यावरण के नायकों में से एक चुना। उन्हें द इकोनॉमिस्ट (नवंबर 2015) द्वारा सार्वजनिक जीवन में विश्व की शीर्ष 50 विविधतापूर्ण शख्सियतों में स्थान दिया गया। न्यूयॉर्क सिटी के मेयर ने 14 अप्रैल, 2016 को ''डॉ. बिंदेश्वर पाठक दिवस'' घोषित किया।

8. 15 अगस्त 2023 को डॉ. पाठक का निधन हो गया ।